संचार

संचार हमारे जीवन का प्रमुख अंग है संचार का विकास मानव सभ्यता के विकास के साथ–साथ हुआ हैं। संचार समाज के आरम्भ से लेकर अब तक समस्त सामाजिक प्राणियों से किसी न किसी रुप में जुड़ा हुआ हैं। दुनिया में कोई भी मानव परिवार, समाज या समूह में परस्पर बातचीत, मेल–जोल अथवा संवाद के अभाव में सामान्य एवं जीवित नहीं रह सकता है।

मनुष्य पृथ्वी का सबसे सर्वगुण सम्पन्न प्राणी है। ईश्वर द्वारा प्रदत्त कई अद्वितीय क्षमताएं उसमें विद्यमान हैं। वह विचार कर सकता है और उसको अभिव्यक्त भी। इसके लिए उसने कई ऐसे माध्यम विकसित किये जो उसके विचारों को स्थाई बना सकें।1 मनुष्य के जीवन के साथ संचार प्रक्रिया सतत् चलती रहती है। संचार मानव समाज का अभिन्न अंग हैं। संचार के माध्यम से ही मनुष्य विकास की सीढ़ियों पर चढ़ते हुए आज सम्पूर्ण दुनिया को अपनी मुठ्ठी में किया हुआ हैं। संचार के अभाव में मानव समाज का निर्माण ही नहीं हो सकता है।

मनुष्य अपने दिनचर्या में विभिन्न प्रकार की संचार प्रक्रिया में सम्मिलित रहता है। स्वप्न देखना, किसी से बात करना, परिचर्चा में भाग लेना, भाषण देना, रेडियो सुनना, फिल्में देखना या फिर समाचार पत्र –पत्रिकायें पढ़ना यह समस्त कार्य संचार की एक व्यवस्थित प्रक्रिया के द्वारा ही संभव हो पाते हैं।2 मानव जीवन के सभी क्षणों में संचार प्रक्रिया विभिन्न माध्यमों से सम्पन्न होती रहती है। संचार की ही देन होती है कि वह अपनी योजनाओं का निर्माण करता है।

संचार का सामान्य अभिप्राय लोगों का आपस में आचार–विचार, ज्ञान तथा भावनाओं का कुछ संकेंतों के द्वारा आदान–प्रदान करने से लिया जाता है। संचार मनुष्य की मूलभूत सहज प्रवृत्तियाँ हैं। प्राग ऐतिहासिक काल के लोगों द्वारा चित्रों के माध्यम से अपनी बात प्रेषित करने की प्रारम्भिक तकनीक आज इण्टरनेट तक पहुंच चुकी है।3

आधुनिक युग में संचार को एक विशाल संसाधन एवं शक्ति के विशाल भण्डार के रुप में विकास किया गया है। इस स्थिति में इस बात को भी सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण हो गया है कि संचार का प्रयोग किसके लिये, किस कारण से किया जा रहा है।4

समाज का हर मानव संचार की शक्ति से पूर्णरुप से परिचित हो चुका है। उसका मानसिक विकास भी संचार क्रियाओं की देन है, अपने मन की बात दूसरे से कहना और दूसरे की बात समझना संचार ही है। इसके कारण ही एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से सामंजस्य स्थापित होता है।

प्रागैतिहासिक काल से आधुनिक काल तक संचार प्रक्रिया तकनीकी पर निर्भर होती गई। मानव के उत्पत्ति के प्रारंभिक काल में संचार साधन सीमित मात्रा में थे। एक दूसरे से संवाद करने के लिए वह संकेतों का प्रयोग करता था। सभ्य समाज के निर्माण में मानव की व्यापक संचार क्षमता का ही योगदान है। जैसे –जैसे संचार माध्यमों का विकास होता गया मनुष्य की संचार क्षमता भी बढ़ने लगी।5

मनुष्य ने संचार के लिए अपने को संकेतों एवं ध्वनि संकेतो तक ही सीमित नहीं रखा। समय–समय पर अपनी शारीरिक एवं मानसिक क्षमता की मदद से मनुष्य कई संचार माध्यमों के खोज के लिए प्रयासरत रहा।6 पशु पक्षियों की भाँति संकेतों के माध्यम से संवाद स्थापित करने की प्रक्रिया लबें समय तक चलती रही।

भाषा संचार के एक विकसित माध्यम के रूप में सामने आई। लेकिन ऐसा माना गया कि भाषा पूर्व में विद्यमान कई माध्यमों का संयोजित एवं संश्लिष्ट रूप थी। यह माध्यम मनुष्य के अंग और उसकी आवाज थी। भाषा के विकास के पूर्व चरण में अंगों का संचालन करके तथा तरह–तरह की ध्वनियां निकाल कर मनुष्य ने अपनी बात लोगों तक को पहुँचाने की कोशिश की होगी। लेकिन यह कोई आवश्यक नहीं है कि अन्य व्यक्ति भी उसकी बात उसी अर्थ में जानें। लेकिन धीरे–धीरे उसके अर्थ लोगों को समझ में आने लगे।7 मनुष्य द्वारा विकसित की गई भाषा के फलस्वरूप संसार में मौजूद सभी वस्तुओं, भावों और गतिविधियों की अभिव्यक्ति

सहज हो गई है। समाज में अलग–अलग मानव समुदायों ने स्वतंत्र ढ़ग से अपनी–अपनी विभिन्न भाषाएं विकसित की। भारत में ही सैकड़ों भाषाएं विकसित हुईं।8

भाषा का विकास मानवीकरण की प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा। संकेतों एवं प्रतीकों के माध्यम से विचारों का आदान–प्रदान सीमित था। मनुष्य के अध्येताओं में कोई भी समूह ऐसा नहीं ज्ञात हुआ जिसके पास संचार हेतु स्वयं की भाषा न रही हो। कुछ ऐसे समूह मिले जिनके शब्द भण्डार तीन सौ शब्दों तक ही सीमित थे और कुछ समूहों में शब्द संख्या सात–आठ सौ थी।9 प्रारम्भिक समय में आज इतने शब्दों की संख्या के न होने के बावजूद यह बहुत ही प्रभावी संचार के माध्यम बने और सूचनाओं एवं विचारों के आदान–प्रदान में प्रभावी भूमिका अदा की। संचार के क्षेत्र में लिपि का अविष्कार हुआ जो कि भाषा के बाद दूसरी बड़ी क्रांति थी । लिपि के पूर्व मानव भाषा के साथ–साथ कई माध्यमों द्वारा संचार करता रहा।10

पाषाण युग में गुफाओं मे निर्मित आकृतियां सूचनाओं को संरक्षित करने के दौरान निर्मित हुईं। इन गुफा चित्रों में सबसे पुराने उदाहरण बीसवीं सदी ई0पू0 के भी मिले हैं। गुफाओं में मिले चित्रों से यह स्पष्ट होता है कि यह मानव के अनुभवों की संरक्षित करने का प्रयास रहा।11

भाषा द्वारा होने वाले संचार में स्थायीपन नहीं था। लेकिन लंबे समय तक भाषा से संचार होता रहा। लिपि के अविष्कार के पश्चात् विचारों, भावनाओं एवं अनुभवों को लिपिबद्ध करने एवं भविष्य के लिये संरक्षित रखना संभव हो सका। लिपि के अविष्कार से लेखन परम्परा का प्रारम्भ हुआ। इसके पूर्व कंठस्थ करके ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक विचारों को प्रेषित किया जाता रहा।12 ऐसी स्थिति में कुछ बातें संरक्षित न होने के कारण अगले पीढ़ी या अन्य क्षेत्र में नहीं संचाारित हो पाती थीं। लिपि के आविष्कार से इस प्रकार की समस्या से निजात मिली। इसके साथ ही बिना दो व्यक्तियों के आमने–सामने संचार संभव हो पाया।

प्राक् युग में लेखन एवं मुद्रण तकनीकी नहीं थी। ऐसी स्थिति में संचार का सबसे सशक्त माध्यम गुरू था जिसके द्वारा विचारों, अनुभवों आदि को अगली पीढ़ी तक पहुंचाया जाता

था।13 गुरु की बहुत बड़ी महत्ता युगों से रही है। अपने मस्तिष्क में संरक्षित ज्ञान को वह अपने शिष्यों को कंठस्थ वर्णन कर बताता था।

लिपि के विकास के सम्बन्ध में कई मान्यताएं प्रचलित हैं। एक मान्यता के अनुसार लिपि का विकास, भाषा के विकास के पश्चात् हुआ। प्राचीन काल में मानव को आधुनिक युग की भाँति सुविधाएं नहीं प्राप्त थीं, फिर भी वह येनकेन प्रकारेण अपने भावों और विचारों को सहेजने के लिए कुछ न कुछ प्रयत्न करता रहा। लिपि के आविष्कार ने मानव की ध्वनियों को प्रदर्शित ही नहीं किया बल्कि विचारों, भावों को स्थिरता प्रदान की। लिपि लेखन पद्धति की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा भाषा को स्थायित्व प्रदान किया जाता है तथा व्यक्त वाणी को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जाता है।' लिपि के विकास के सम्बन्ध में दूसरी मान्यता यह है कि लिपि भाषा के पहले विकसित हुई। इसके अनुसार प्रारम्भिक अवस्था में मनुष्य भाषा की अनुपलब्धता में विचारों की अभिव्यक्ति शारीरिक अंगों के संचालन द्वारा किया करता था। बाद में इन्हीं संकेतों से चित्रण लिपि का जन्म हुआ।

लेकिन अधिकांश विद्वान भाषा के पश्चात् लिपि का विकास मानते है। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि मानव समाज में अब तक ज्ञात किसी ऐसी अवस्था की जानकारी नहीं हुई है जिसमें मनुष्य संचार के लिए भाषा प्रयोग न करता हो। अनेक ऐसी जातियां है जो भाषा का प्रयोग तो करती है परन्तु उन्हें लिपि का ज्ञान नहीं है।14 लिपि के आविष्कार के पश्चात् मनुष्य के विचारों को स्थायित्व मिला। वह अपने भावों, विचारों को वृक्ष की छालों, पत्थरों, पत्तों, मिट्टी के ईटों, पशु के चमड़ों पर विभिन्न तरीकों से लिखने लगा। वर्णनात्मक लिपि के आने के बाद सम्पूर्ण पुस्तक हाथों से लिख कर तैयार की जाने लगी। उस समय पढ़े–लिखे लोगों की संख्या कम थी। हाथ से लिखी पुस्तकें बहुत ही मंहगी होती थीं और इसे सिर्फ राजा–महराजा ही खरीदते थे। ऐसी स्थिति में समाज के कुछ ही भाग तक सूचना का इस रूप में आदान–प्रदान हो पाता था। काष्ठ स्तम्भों, भोज पत्रों, चर्म शिल्प, शिला लेख और मिट्टी के बर्तनों पर लेखन के माध्यम से मानव संचार को एक नई दिशा मिली।15

कागज के आविष्कार ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी। कागज का निर्माण मुद्रण के आविष्कार के कई वर्षों पूर्व ही हो गया था। एक चीनी प्सूत्साई–लून ने कपास और मलमल

की पट्टियों से कागज का निर्माण किया। कागज लेखन एवं चित्रांकन (पेंटिग) का एक महत्वपूर्ण साधन बना।16 पांच सौ वर्षों तक यह शिल्प चीन में रहा और फिर सातवीं शताब्दी के आरम्भ में यह कला जापान पहुंची। वहां बौद्ध भिक्षुओं ने मलबरी वृक्ष की छाल से कागज का निर्माण प्रारम्भ किया।17

कागज के बाद प्रिटिंग के विकास ने अधिसंख्य लोगों के मध्य त्वरित गति से संचार को संभव बनाया। ई0सं0 712 में चीन में सीमित क्षेत्र में ब्लॉक प्रिटिंग की शुरूआत हुई थी। जापान में इसकी लोकप्रियता में वृद्धि हुई और वहां की रानी शोटुकु ने 20 लाख संस्कृत श्लोक चीनी लिपि में मुद्रण कर जनमानस में वितरित करने के आदेश दिए थे।18 यूरोप में प्रिंटिंग के पूर्व हाथ से लिखे हुए इश्तहारों को दीवारों पर चिपकाने की परम्परा थी। यहां गुटेनबर्ग ने 1430 ई0 में चल टाइप का आविष्कार किया। भारत में मुद्रण का प्रचलन 6 सितम्बर 1556 को ईसाई धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए गोवा में स्थापित प्रेस में माना जाता है।19

इंग्लैण्ड में विश्व का प्रथम प्रेस 1476 ई0 में स्थापित हुआ था। 1500 ई0 में इंग्लैण्ड में दो से तीन प्रिंटिंग प्रेस थे। सन् 1600 ई0 तक इनकी संख्या में वृद्धि हुई और प्रेस की संख्या 90 तक पहुंच गई। 1510 ई0 में विभिन्न विषयों में मुद्रित होने वाली पुस्तकों की संख्या 13 थी। लेकिन धीरे–धीरे 1600 ई0 तक प्रति वर्ष औसतन 150 पुस्तकें मुद्रित होने लगीं। गाथाओं, पंचागों और पर्चों आदि का भी मुद्रण होने लगा था। 17वीं सदी में प्रकाशित होने वाली सामान्य पुस्तकों के एक संस्करण की 2000 प्रतियां प्रकाशित होने लगी थीं।20 मुद्रण के विकास ने ज्ञान के विस्तार को बहुत ही सुलभ बना दिया। शिक्षा के प्रचार–प्रसार में प्रिंटिंग की महत्वपूर्ण भूमिका रही। समाज के विभिन्न वर्गों तक संचार संभव हो पाया।

भारत में गोवा के बाद बम्बई में प्रेस की स्थापना 1662 ई0, मद्रास में 1772 ई0 तथा कलकत्ता में 1779 ई0 में हुई थी। 26 जनवरी सन् 1780 में एक गैर भारतीय जेम्स ऑगस्टस हिक्की द्वारा 'बंगाल गजट एण्ड कैलकटा एडवटाईजर' नामक समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया।21

धीरे–धीरे देश के विभिन्न हिस्सों से समाचार पत्रों का प्रकाशन प्रारम्भ हो गया। समाचार पत्रों ने समाज को एक सूत्र में पिरोने एवं नई दिशा प्रदान करने में अद्वितीय योगदान दिया जो आज भी इतिहास के पन्नों में दर्ज है।

जनसंचार माध्यम के रूप में अपनी सशक्त उपस्थिति रेडियो ने दर्ज कराई। रेडियो के आविष्कार ने अशिक्षितों के लिए भी सरल रूप में संचार को संभव बनाया। 1890 में गुगलेल्यो मारकानी ने हवा में चलने वाली ऐसी तरंगों का आविष्कार किया जिसके द्वारा संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंच सकते थे। इसका प्रयोग पानी की जहाजों से सम्पर्क स्थापित करने के लिए किया जाने लगा। जून 1923 ई0 को 'बॉम्बे रेडियो क्लब' ने भारत का पहला रेडियो स्टेशन प्रारम्भ किया।22 1923 ई0 को स्थापित रेडियो क्लब के पश्चात् रेडियो की लोकप्रियता में बेतहाशा वृद्धि हुई जो आज भी बरकरार है। एफ.एम. रेडियो पर युवाओं को सड़क पर चलते–थिरकते साथ ही गांव के किसान को खेत में काम करते रेडियो सुनते देखा जा सकता है।

दृश्य–श्रव्य संचार माध्यम के रूप में टेलीविजन का आविष्कार सन् 1922 ई0 में स्कॉटलैंड के जे0एल0 बेयर्ड ने किया।23 टेलीविजन का आविष्कार एक अद्भुत घटना थी, जिसने संचार क्रांति के युग में सबसे सशक्त दावेदारी प्रस्तुत की। टीवी आ अधिकांश लोगों के दिनचर्या में जुड़ गया है और उसके प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। पूरे देश को टेलीविजन ने देश–विदेश में घट रही घटनाओं से परिचित ही नहीं कराया वरन् उन्हे जागरूक भी किया है।

टेलीविजन के बाद सूचना व ज्ञान के अथाह भंडार के साथ आज इंटरनेट हमारे सामने है जिससे जुड़ते ही लाखों–करोड़ों वेब पेज हमारे समक्ष सूचना के भण्डार के साथ होते हैं। इंटरनेट के माध्यम से देश के किसी कोने की जानकारी को पलक झपकते लिया जा सकता है। इंटरनेट का संचालन कम्प्यूटर के माध्यम से किया जाता है।

सन् 1833 ई0 में एक अंग्रेज गणितज्ञ चार्ल्स बेबेज ने अनेक वर्षों के अथक प्रयास के बाद एक मशीन की परिकल्पना की थी, जिसे ऐनेलिरिकल इंजन कहा गया। यह एक पूर्ण

स्वचालित यंत्र था।24 इसके पश्चात् कम्प्यूटर की तकनीकी में परिवर्तन होते गए और सूचना संग्रह करने का एक उपकरण सामने आया। कम्प्यूटर, टेलीफोन के द्वारा मिलने वाली सुविधाओं ने आम आदमी को इंटरनेट के बहुत ही करीब ला दिया। इंटरनेट के विकास के फलस्वरूप बैंकिंग, रेलवे जैसे विभागों ने अद्वितीय प्रगति की।

प्राग् युग के मानव से सूचना क्रांति के इस युग के मानव में संचार के प्रति अनेक परिवर्तन हुए। उसे सूचना के महत्व का भी पूर्ण ज्ञान हुआ। समाचार पत्र–पत्रिकाओं के प्रसार संख्या में वृद्धि, रेडियो के श्रोताओं की संख्या में इजाफा और टीवी सेटों की बिक्री इसके साक्षात् प्रमाण है।

मोबाइल के बढ़ते चलन ने आंतरिक संवाद के साथ ही जनमाध्यम का भी रूप ले लिया है। अब मोबाइल में उपलब्ध मल्टीमीडिया सुविधाओं के द्वारा उसकी स्क्रीन पर ही समाचार पत्र, रेडियो, टेलीविजन व इंटरनेट की सुविधाएं मिल रही है।

इन आधुनिक संचार माध्यमों के अतिरिक्त आज भी भारतीय समाज के पास अपनी लोक कलाओं, लोक नृत्यों, लोक कथाओं, महाकाव्यों, आल्हाओं और नाटकों का विपुल भण्डार है जिसके माध्यम से लंबे समय तक संचार होता रहा है। यह आम जनता के मध्य मनोरंजन के लोकप्रिय साधन के रूप में आज भी मौजूद है।25

01. दूबे श्यामचरण, समय और संस्कृति, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1996, पृ0–100.
02. Introduction to Communication, First Block PGMC-01, IGNOU, 1997,P. 08.
03. राय डॉ0 अनिल के0, संचार के सात सोपान, यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन,नई दिल्ली, 2006, पृ0–01.
04. जोशी पूरनचन्द्र, संस्कृति विकास और संचार क्रांति, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली, 2001, पृ0–21.
05. राजगढ़िया विष्णु, जनसंचार सिद्धान्त और अनुप्रयोग, राधाकष्ण प्रकाशन,दिल्ली

पृ0–21.

06. पारख जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2000, पृ0–26.

07. वहीं, 07.

08. वहीं, पृ0–27.

09. दूबे श्यामचरण, समय और संस्कृति, उक्त, पृ0–104.

10. वहीं, पू0–104.

11. पारख जवरीमल्ल, जनसंचार माध्यमों का वैचारिक परिप्रेक्ष्य, उक्त, पृ0–171.

12. वहीं, पृ0–28.

13. ठाकुर आलोक दत्त, हिन्दी पत्रकारिता और जनसंचार, वाणी प्रकाशन, 2009, पृ0–35.

14. शर्मा डॉ0 राजमणि, हिन्दी भाषा इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, 2004, पृ0 367–368.

15. गौतम रुपचन्द्र, संचार से जनसंचार, श्री नटराज प्रकाशन, 2005, पृ0–17.

16. मिश्र चन्द्रशेखर, मुद्रण सामग्री प्रौद्योगिकी, म0प्र0 हिन्दी अकादमी,1995.पृ0–05.

17. दूबे श्यामचरण, समय और संस्कृति, उक्त, पृ0–105.

18. मिश्र, चन्द्रशेखर, मुद्रण सामग्री प्रौद्योगिकी, उक्त, पृ0–5.

19. राय अनिल के0, संचार के सात सोपान, उक्त, पृ0–32.

20. वर्मा सत्येन्द्र, संचार माध्यमों का वर्ग चरित्र, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली, 2000, पृ0–21.

21. तिवारी डॉ0 अर्जुन, आधुनिक पत्रकारिता, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी,2004, पृ0–03.

22. गौतम रुपचन्द्र, इलेक्ट्रानिक मीडिया के सिद्धान्त, श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली, 2003, पृ0–102.

23. राय डॉ0 अनिल के0, संचार क सात सोपान, उक्त, पृ0–138.

24. जैन डॉ0 लाल, शिक्षण एवं शोध अभियोग्यता, उपकार प्रकाशन, आगरा, 2007, पृ0—179.

25. चतुर्वेदी एन0पी0, जनसंचार एवं पत्रकारिता, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर, 2005, पृ0—01.